विद्यापति

विद्यापति मैथिलीक कवि पति अधिक जनप्रिय छथि। मैथिली मिथिलांचलक भाषा अछि। एहि भाषाक सभसँ पैघा कवि छथि विद्यापति। मैथिलीमे ओ केवल गीत लिखलनि। गीत काव्य-रचनाक एकटा विधा अछि। विद्यापतिक गीत देशेमे नहि, विदेशोमे लोक पढ़लक। सौंसे संसारमे विद्यापति आ हुनक गीतक माध्यमसँ लोक मिथिला आ ओकर भाषा तथा साहित्यकेँ जनलक। दुनिया भरिक साहित्यिक मानचित्रमे मैथिली-साहित्यक स्थान सुरक्षित भऽ गेल।

विद्यापतिक जन्म मधुबनी जिलाक बिस्फी गाममे 1350 इसवीमे भेल छलनि। हुनक मृत्यु 1440 इसवीक भेलनि। विद्वानलोकनिमे विद्यापतिक जन्म आ मृत्यु कोन वर्ष भेलनि ताहि सम्बन्धमे मतभेद अछि, मुदा उक्त तिथिक प्रसंग अनेक विचारक सहमत छथि। एतेक धरि तऽ निश्चित अछिये जे विद्यापति लगभग सात सय वर्ष पहिने भेल छलाह। ओहि समयमे मिथिलामे राजतंत्र छल। राजाक आदेश चलैत छल। विद्यापति राज-पण्डित रहथि। मिथिलामे पहिने कर्णाट वंशक राजालोकनि राज कयलनि बादमे ओइनवार वंशक। कर्णाट वंशक राजा हरसिंहदेव पर मुसलमान आक्रमणकारी चढ़ाइ कयलक। हरसिंहदेव हारि कऽ नेपाल पड़ा गेलाह। तकरा बाद मुसलमान आक्रमणकारी ओइनवार वंशक पण्डित कामेश्वर ठाकुरकेँ तिरहुतक राज्य सौंपि देलक। मुदा, कामेश्वर ठाकुर राजकाजक ओझरौटमे फँसब स्वीकार नहि कयलनि। हुनक बेटा सभमे राजा बनबाक लेल झगड़ा-मारि भेल। अन्ततः भवेश्वर ठाकुर राजा बनबामे सफल भेलाह। राजा भेलाक बाद ओ 'ठाकुर' सँ 'सिंह' भऽ गेलाह। भवेश्वर ठाकुर अर्थात् भव सिंह ओइनवार वंशक पहिल राजा भेलाह। हुनक बेटा रहथिन देव सिंह। हिनके समयमे विद्यापति पहिले-पहिल राज-दरबारसँ जुड़लाह। शिव सिंह, कीर्त्ति सिंह आदि राजकुमार विद्यापतिक संगतुरिया रहथिन। शिव सिंह जखन राजा भेलाह तखन ओ अपन बालसंगी विद्यापतिकेँ राज-पण्डित बना देलथिन।

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

कर्त्तव्यनिष्ठ आ शास्त्र डॉ० राजपण्डितक रूपमे विद्यापति राजासँ लऽ जनसाहित्य कऽ आमलोक धरि प्रसिद्ध भऽ गेलाह। हुनक़ प्रतिष्ठा दिनानुदिन बढ़ैत गेलनि।

विद्यापति राजपण्डितक रूपमे काज करैत छलाह से एक तरहेँ हुनक नोकरी छलनि। जीविकाक साधन छलनि। ओहि काज करैत ओ अपन समय लिखबामे लगबैत छलाह। लीखब हुनक प्रिय, काज रहनि। विद्यापति देखलनि जे मुसलमानी आक्रमणक कारणे मिथिलाक राजनीतिक स्थिति डँवाडोल भऽ गेल अछि। सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न भऽ गेल अछि। आमलोक कतऽ जाइ की करी से निर्णय नहि कऽ पाबि रहल अछि। तेँ ओ तत्कालीन स्थितिक निवारणक दिशामे अग्रसर भेलाह। पोथी लिखलनि। ओ तीन भाषामे पोथी लिखलनि- संस्कृत, अवहट्ठ आ मैथिली। संस्कृतमे हुनक प्रमुख कृति अछि-पुरुष-परीक्षा, लिखनावली, विभागसार आदि। अवहट्ठमे कीर्त्तिलता आ कीर्त्तिपताका नामक दूटा पुस्तक अछि। ई सभ पोथी तत्कालीन स्थितिक दस्तावेज थिक। पुरुष-परीक्षामे छोट-छोट कथाक माध्यमसँ किशोर वयक शिक्षार्थीकेँ जीवन आ जगतसँ परिचित कराओल गेल अछि। एहिमे संदेशं अछि। प्रेरणा अछि।

मुदा, विद्यापति आइ जानल जाइत छथि मैथिली भाषामे लिखित गीतक कारणे। विद्यापति मैथिलीमे लिखबाक निर्णय कयलनि से बड़ पैघ बात भेल। कहि चुकल छी जे हुनका समयमे मिथिलाक समाज अस्तव्यस्त भऽ गेल छल। लोकमे एकता नहि छलैक। भेद-भाव बढ़ि रहल छलैक। विद्यापति एहि स्थितिकेँ देखलनि, गमलनि। आ, तेँ मैथिलीमे लिखब जरूरी बुझलनि। भाषा सीमेन्ट थिक। ओ जोड़ैत अछि। अपन लोकक लग अनैत अछि। आत्मीयताक भाव बढ़बैत अछि। विद्यापति लोकक घरक भाषा, परिवार आ समाजक व्यावहारिक भाषाक महत्व जनैत छलाह। तेँ ओ मैथिलीमे तँ लिखबे कयलनि, जे लिखलनि से गीते छल। मैथिलीमे केवल गीत लिखलनि। जे लिखिपढ़ि नहि सकैत रहय हुनक गीत गबैत रहैत छल। हुनक गीतकेँ मोटामोटी तीन भागमे बाँटि सकैत छी-राधा-कृष्णसँ सम्बन्धित गीत, गौरी-महादेव विषयक गीत आ सामान्य

व्यवहारक गीत। राधाकृष्ण विषयक गीत प्रेम-गीत थिक। नारी आ पुरुषक प्रेम-गीत। प्रेम मनुष्यक स्वभावमे अछि। मिथिलामे जखन सामाजिक अराजकता रहय, भाइ-भाइमे कलह आ मारि-पीट होइत रहय तखन प्रेमक गीत गाबि स्नेह आ अनुरागक वातावरण बनायब आवश्यक छल। समयक माँग छल। विद्यापति प्रेमक गीत गओलनि। प्रेमक तागमे बन्हबाक प्रयास कयलनि। शिव-पार्वतीक गीत दू प्रकारक अछि-महेशबानी आ नचारी। महेशबानीमे गौरी आ महादेवक दाम्पत्य-जीवनक प्रसंग सभ अछि। नचारी एक प्रकारक भक्ति-गीत अछि-कखन हरब दुःख मोर हे भोलानाथ। एहि दुनू प्रकारक गीतक अतिरिक्त अछि-व्यवहारगीत। मिथिलाक सामाजिक रीति-रेवाज, पावनि-तिहारक अवसर पर गयबाक लेल जे किछु गीत विद्यापति लिखलनि से एहि कोटिक गीत थिक। छठिहार, बिआह, पूजा-पाठ, धर्म-कर्म आदि काजमे स्त्रीगण सभ यैह गीत गबैत छथि।

स्पष्ट अछि जे विद्यापतिक रचनाक लोकप्रियताक कारण हुनक सामाजिक चेतना अछि। ओ जागरणक प्रतीक छथि। मंत्रदाता गुरु छथि। भाषा आ संस्कृतिक प्रति आदरभाव रखबाक गुरु-मंत्र हुनक रचनासँ भेटैत अछि। आइ ओ नहि छथि, हुनक मृत्यु कतेक वर्ष पहिने भऽ चुकल अछि, मुदा हुनक रचना आइयो ओहिना महत्वपूर्ण अछि। हुनक प्रासंगिकता आइयो यथावत् अछि।

ABDIEL SOLUTIONS
ABSOL
PATNA

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

(i) विद्यापतिक जन्म कतऽ भेल छलनि ?

(क) बिस्फी (ख) सौराठ

(ग) अन्धरा ठाढ़ी (घ) बड़गाम

(ii) विद्यापतिक संगतुरिया रहथिन –

(क) भव सिंह (ख) शिव सिंह

(ग) कीर्त्ति सिंह (घ) ख आ ग दुनूक

(iii) अवहट्ठमे हिनक दूटा पुस्तक अछि –

(क) पुरुष-परीक्षा (ख) कीर्त्तिलता

(ग) कीर्त्तिपताका (घ) ख आ ग दुनू।

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) पठित पाठक आधार पर विद्यापतिक साहित्यिक परिचय दिअ।

(ii) विद्यापति लोक चेतनाक कवि छलाह। वर्णन करु।

(iii) विद्यापतिक रचनासँ परिचित कराउ।

(iv) विद्यापतिक भक्ति गीतक वर्णन करु।

(v) ओ कोना लोकप्रिय भेलाह।